Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

भारतीय नौका निर्माण कला

Dr Hetal M Pandya

Department of Sanskrit Gujarat University Ahmedabad.

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

वैदिक काल में लोगो को समुद्र का ज्ञान था। ऋग्वेद के अनेक मन्त्रों में समुद्र एवं नौकाओं के सन्दर्भ मिलते हैं। ऋग्वेद के अनेक मन्त्रों में साधारण नौकाओं और सीता से चलने वाली वही नौकाओं के स्पष्ट उल्लेख है। सामान्यतया ऋग्वेद के 'भी' शब्द का जो उल्लेख मिलता है उसका भावार्थ सामान्य नदियों में चलनेवाली छोटी-छोटी नावों से ही प्रतीत होता है। ऋग्वेद में प्रयुक्त 'नी' शब्द का तात्पर्य उन बेड़ो (दास नौकाओ) से है, जो दक्षिण भारतीय समुद्रतटों में चलनेवाली टोना नौकाओं के समान थी। वैदिक साहित्य में नौकाओं से सम्बन्धित मस्तूल और पाल का उल्लेख नहीं मिलता परन्तु इनके उल्लेखों के अभाव में तत्कालीन समाज में प्रचलित नौ परिवहन के सन्दर्भ में सन्देह नहीं व्यक्त किया जा सकता क्योंकि ऋग्वेद की ऋचाओं में लाभ के लिए समुद्र यात्राओ के स्पष्ट उल्लेख है।' (नासत्यौ) अश्विनी के अनुग्रह से शतारिल नाव पर चढकर समुद्रयात्रा करनेवाले तुग्रपुत्र भुण्य के उद्धार का उल्लेख ऋग्वेद के अनेक मन्त्रों में आया है। वैदिक ऋचाओं में शतारित्राम् नौकाओं के सन्दर्भों से विदित होता है कि इस काल में कुछ नौकाए इतनी बड़ी हुआ करती थी कि उनको खेंचने के लिए सौ-सौ डाड़ो की आवश्यक्ता पडती थी। वाजसनेयी संहिता में भी सौ डाड़ो वाले जहाज़ का उल्लेख है । अथर्ववेद एवं शतपथ ब्राह्मण में भी नौ - परिवहन संचालित कुछ शब्द मिलते है, यथा अरित, नावजा, नौमण्ड और शविन इत्यादि । पाणिनि की अष्टाध्यायी, जातक ग्रन्थों, रामायण एवं महाभारत आदि ग्रन्थों में भी नौ-परिवहन के उल्लेख भरे पड़े हैं।

पाणिनि ने पानी में चलनेवाले वाहनों को उदक्वहन या उद्वाहन की संज्ञा दी है।' उन्होंने उद्वाहनों से सम्बन्धित नाव (नौ) अरित्रे नाविक" आदि का भी उल्लेख किया है जिनसे तत्कालीन लोकजीवन में नौ-परिवहन की लोकप्रियता ज्ञात होती है। नावों के निर्दिष्ट स्थानों को नव्य कहा जाता है।"

जातक ग्रन्थों में सामुद्रिक यात्राओं के जो विवरण मिलते हैं, उनमें अधिकांशतया उन जहांजों के ही वर्णन है जो माल ढोने के काम में लाई जाती थी। सीलनिसंस जातक में सात रत्नों से भरी हुई ऐसी ही एक नौका का वर्णन है जिसमें तीन मस्तूल, इन्द्रनीलमणि की जोते तथा साने के चप्पू लगे हुए थे। सुप्पारक

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

जातक में उन व्यापारियों की समुदयात्रा का वर्णन है जो प्रायः जहाजों में सामान भरकर दूसरे देशों में लाभ कमाने के लिए जाते थे ! इस सन्दर्भ में पाणिनि की अष्टाध्यायी के वे सूत्र महत्त्वपूर्ण है जिनमें नावों पर लदे हुए सामानों के आधार पर उनके व्यापारियों कानामकरण किया गया है यथा नावोद्विगोः । नात्रों की संख्या के आधार पर ही व्यापारियों की समृद्धता का भी अनुमान किया जाता था, यथा दो नाववाले व्यापारी दिनावधन कहलाता था और इसी प्रकार वह व्यापारी जिनसे पांच नावे लादी हो पचनावप्रिय कहा जाता था। दो नावों के साथ आया हुआ बजड़ा द्विवरू या द्विनावमय कहलाता था। उपर्युक्त साक्ष्यों से इस काल की व्यापारिक नौकाओं के अपेक्षाकृतवृहद् परिणाम का अनुमान किया जा सकता है। संखजातका ने समुद्र की देवी कृपा से जिस नौका के निर्माण का वर्णन है, उसके उपकरणों एवं परिणाम का देख इस प्रकार मिलता है कि देवी ने प्रसन्न होकर सात रनोंवाली नौका बनाई जिसकी लम्बाई आठ उपभु, चौड़ाई चार उपभु और गहराई बीस यष्टिकाथी उसके इन्द्रनीलमय तीन कूप थे तथा सुवर्णमय जोत, रजतमय वादवान तथा स्वर्णमय चप्प थे। संघ जातक के सन्दर्भ से व्यापारिक नौकाओ के वृहद् होने का स्पष्टतः आभास होता है। महाजनक जातक के कथानक से नौकाओं के द्रुतगति से चलने तथा उनके द्वारा अनेक दिनों में तय की गई यात्राओं का सन्दर्भ मिलता है। इसमें उल्लेख मिलता है। इसमें उल्लेख है कि सुवर्णभूमि जानेवाली व्यापारियों की नौकाये प्रतिदिन सौ योजन की दूरी यात्रातय करती थीं।

जातकों के अनेकानेक कथानकों से समुद्रीजहाजों अथवा बड़ी नौकाओं के विविध उपकरणों पर भी प्रकाश पडता है। प्रायः ये जहाज लकड़ी के तख्तों (दारुफलकानि) की बनी होती थी।" जिसके कारण ये अनुकूल वायु में सुगमता से चलती थी।" जैन साहित्य में सोलह प्रकार की समुद्री हवाओं का वर्णन किया गया है जिससे निर्यामकों को जहाज चलाने में बहुत मदद मिलती थी। जहाजों की संरचना एवं उनके उपकरण के सन्दर्भ में यह पता लगता है कि बाहरी पंजर के अलावा उनमें तीनमस्तूल (कूप) रस्थियाँ (योतम्) पाल (सितय) तख्तें (पटराणि), ढाड और पतवार (फियारितानि) और लंगर (लंखरो) भी होतो थे ।

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

जातक कथानकों में यंत्रचालित नौकाओ का भी उल्लेख मिलता है। समुद्रवाणिज जातक में कुछ व्यक्तियों द्वारा यह कहते हुए चित्रित किया गया हैं कि हम सब को मिलाकर सब यन्त्रों से युक्त दृढद्रोणी वाली नौका बनानी चाहिए।" इस प्रकार का एक उल्लेख महाभारत में भी आया है। सर्ववातसहां नावं यन्त्र युक्ता पताकिनीम् शिवे भागीरथे तीरे नैर विस्त्रभिम्भिः कृताम् 12 जिसमें गंगाजी के तट पर सब प्रकार के वेगों को सहने में समर्थ और ध्वजपताकाओं से सुशोभित यन्त्र लगायी गयी नौका के निर्माण का चित्रण हैं। जातक एवं महाभारत के इन सन्दर्भों से यह अनुमान अवश्य होता कि कुछ नौकाओं में सम्भवतः तीव्रतर गति के लिए यन्त्रों का प्रयोग किया जाता था। परन्तुं छोटी बड़ी नदियों को पार करने केलिए अपेक्षाकृत टीकाओं का किया जाता था। रामायण से ज्ञात होता है कि जन सामान्य नावों को पतवारों और बड़ों की सहायता से खेलकर ही नदी पार करता था अयोध्याकाण्ड में एक ऐसी नाव का वर्णन है कि जो मजबूत होने के साथ-साथ सुगमतापूर्वक खेने योग्य भी थी। उसमें दाइ लगे हुए थे और उस पर कर्णधार बैठा हुआ था

रामायण के अनेक स्थलों पर ऐसी नावों को वर्णन भी आए है। जिनमें प्रायः पाल, पतवार और अद लगे होने का उल्लेख है। ऐसी ही एक नौका पर विश्वामित्र के साथ राम और लक्ष्मण ने गंगा नदी को पार किया था, जिसमें उपर्युक्त उपकरणों के अतिरिक्त सुखद दरी भी बिछी हुई थी। वह नीका उपर से ढकी हुई श्री रामायण का यह उल्लेख यह प्रमाणित करता है कि उस समय कभी-कभी सवारी के उपयोग में आनेवाली नौकाओं को उपर से ढँककर अथवा छाजन लगाकर चलाया जाता था। परन्तु छाजन युक्त अथवा ढकी हुई नौकाओं के उल्लेख तत्कालीन अन्य साहित्यिक साक्ष्यों में उपलब्ध नहीं होते। इससे ऐसा लगता है कि ऐसी नौकाओं का उपयोग जन-सामान्य में प्रचलित नहीं था, बल्कि समाज के संभ्रान्त लोगों के द्वारा ही इनका उपयोग किया जाता था।

रामायण के कुछ सन्दर्भों से यह विदित होता है कि इस काल में नौकाओं को आकर्षणयुक्त एवं रोचक बनाने के लिए उनको अनेक अलंकरणों से सुसज्जित भी किया जाया था। उत्तरकाण्ड में ऐसी ऐसी एक

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

सर्वभूषित नाव का वर्णन है। इसके अतिरिक्त इस महाकाव्य में स्वस्तिक नामों से प्रसिद्ध नौकाओं का भी वर्णन है जो सम्भवतः स्वस्तिक चिह्नों से अलंकृत होने के कारण ही स्वस्तिक नामों से जानी जाती थी। नावों की सज्जा के लिए पताकाओं का उपयोग किया जाता था जिनमें चण्टियाँ लगी रहती थीं तथा उनमें बहुत डांड भी लगे रहते थे। स्वर्ण आदि चिन्हों को अङ्कित कर उन्हें विभूषित भी किया जाता था। 25

कौटिल्य के अर्थशास्त्र एवं पतंजलि के महाभाष्य के विविध निर्देशों एवं उद्धरणों से पता चलता है कि मौर्य-शृंग काल में जल परिवहन विकसित अवस्था में था और इस परिवहन पर राज्य का नियन्त्रण भी था। कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में जल परिवहन को राज्य के नियन्त्रण में रखने के लिए नावाध्यक्ष की नियुक्ति की अनुशंसा की है। 20 नावाध्यक्ष का मुख्य कार्य समुद्रतट की समीपवर्ती नदी को, समुद्र के नौका मार्गों को राज्य की झील एवं तालाबो को तथा गाँव के छोटे-छोटे जलीय मार्गो को भली-भांति देखना और जलीय मार्गो से होने वाले व्यापार पर 'फर' के रूप में राजकीय अंशकी वसूली (संग्रह) करना था। अर्थशास्त्र से पता चलता वै कि मौर्यो के समय में राज्यकी और से बड़ी बड़ी नौकायें तथा छोटी छोटी द्रोणियां चलायी जाती थी। जिनसे लोग नदियों तथा अन्य जलीय स्थानों को पार करते थे। नदी पार करनेवाले इन यात्रियों से किराया लिया जाता था, जिस को तर कहते थे। मनुस्मृति मे किराए की यह दस प्रकार बतलाई गयी है। पतंजलि ने महाभाष्य में बड़ी बड़ी नौकाओं को राजनौः कहा हैं। ये नौकाएँ राज्य की ओर से घाट को पार करने के लिए चलायी जाती थी। महाभाष्य में ही एक अन्य उद्धरण में यह स्पष्ट किया है कि "राजनौः" राजकी सर्वथा व्यक्तिगत व्यवहार की नाव होती थी। राज्य की और चलाई जानेवाली नौकाओं में प्रायः शासक, नियामक, क्षात्राग्राहक, रश्मिग्राहक और उत्सेचक रहा करते थे। अर्थशास्त्र में नावाध्यक्ष को यह विधान दिया गया है कि नाव का कप्तान (शासक) नवचालक (नियामक) लंगर डालनेवाला (क्षत्रग्राहक) रस्सी पतवार पकड़नेवाला (रश्मिग्राहक) और नौका में भरे हुए पानी को उलोचनेवाला (उत्सेचक) इन पाँच कर्मचारियों के रहने पर ही बड़ी-बड़ी नौकाओं को गर्मी तथा सर्दी में समान रूप से रहनेवाली बड़ी-बड़ी नदियों में चलाने की

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

आज्ञा देनी चाहिए ।" नौकाओं और जहाजो के अतिरिक्त जल परिवहन के कुछ अन्य साधनों को भी यत्र तत्र उल्लेख मिलते है। जिनका संक्षिप्त विवरण यहाँ अपेक्षित है। भस्त्रा का सामान्य अर्थ यद्यपि लोहार की धौंकनी है किन्तु इस सब्द का मूल अर्थ पशु की फुलाई हुई खाल से लिया जाता था। इसी अर्थ में भस्त्रा उस बजड़े को कहा जाता था जो भेड बकरियों या उससे बनी खालों को हवा में फुलाकर और एक दूसरे में बांधकर बनाया जाता था। इस प्रकार यह माल ढोने का एक साधन था। पाणिनि ने भस्त्रा से माल ढोने वाले मल्लाहों को भारित्रका कहा है। इसका पंजाब, उत्तर-पश्चिम भारत और अफघानिस्तान की पहाड़ीनदियों में विशेष प्रचलन था। भस्त्राणदिगण में 'भट्ट' शब्द का पाठ है जो सम्भवतः लकड़ी को लट्ठों या वांस को मुटठों को बांधकार बनाया जाता था। जिसे भरड़ा कहते है। रामायण के एक उल्लेख में नदी पार करने के लिए बनाये गये बड़े का भी वर्णन जंगली सूखे काठ को बटोर कर बनाया गया था। रामायण के यह उल्लेख से स्पष्ट करते है कि इस बात में लोग नदी पार करने के लिए इस प्रकार के साधनों का प्रयोग करते थे जो समाज के सर्वसाधारण लोगों के परिवहन के सूचक हैं। पाणिनि के सूत्र हरत्युत्सडादिभ्यः " के गणपाठ के अनुसार उड्डप, उत्पट, पिटक ये तीन शब्द पढ़े गये है। ये शब्द विभिन्न प्रकार की नावों के वाचक है। उड्डप एक छोटी नाव थी जो वर्तमान डोंगी के समान थी। यह आदमी द्वारा चलायी जानेवाली नौका थी । माल्लिनाथ ने सज्जनकोश का प्रमाण देते हुए उड्डप को चर्मानवनद्व यानपात्र कहा है। इससे ज्ञात होता है कि चमड़े से मढी हुई छोटी गोल डोंग उड्डयन कहलाती थी ।पाणिनि ने काशिका में काष्ठप्लक का उल्लेख किया है, यह ट्रेड के तने को खोखला करके बनाई हुई डोंगी जान पडती हैं। जैसा कि सज्जन कोश के प्रमाण से ज्ञात होता है कि करण्डी की भांति खोखला किया हुआ लकड़ या लट्ठी प्लव कहलाता था। भर्तृहरि ने लिखा है कि दुस्तर समुद्र को पार करने में जहाज काम देता है पोतो दुस्तखारिराशितरणे। नावों और जहाजों की निर्माण कला पर ज्योतिषाचार्य वराहमिहिरकृत 'बृहत्संहिता' तथा भोजकृत 'युक्तिकल्पतरु' में कुछ प्रकाश डाला गया है।" भोज ने यह भी लिखा है कि जहाजों के पैदों के तख्तों को जोड़ने के लिए लोहे से काम न लेना चाहिए; क्योंकि सम्भव है कि समुद्र की चट्टानों में कही चुम्बक हो तो वह स्वभावतः लोहे को अपनी

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

ओर खींचेगा जिससे जहाजों के लिए खतरा है। जहाजों के लिये खतरा है ।" 'युक्तिकल्पतरु' में आकर-प्रकार एवं लंबाई- चौड़ाई की दृष्टि से नौकाओं के कई प्रकार बतलायें गये हैं। नौकाओं के पहले तो दो विभाग बतलाये गये हैं। एक 'सामान्य' जो साधारण नदियों में चल सकें और दूसरे विशेष जो समुद्रयात्रा का काम दे सके। लम्बाई चौडाई और उँचाई का ध्यान रखते हुए क्षुद्रा, मध्यमा, भीमा, चपला, पटला, भया, दीर्घा, पत्रपुटा गर्भरा, मन्थरा- ये दस प्रकार की सामान्य नावें बतलायी गयी है। क्षुद्राको लम्बाई 16 चौडाई 14 और गहराई या ऊँचाई 4 हाथ होनी चाहिये। इसी तरह इन सब की नाप दी हुई है और मन्थरा की लम्बाई 120, चौडाई 60 ऊँचाई भी 60 हाथ की बतलायी गई है। सब में चौडाई और ऊँचाई की एक ही नाप है।" 'विशेष' के भी दो विभाग किये गये है दीर्घा और उन्नता । फिर दीर्घा के दीर्घिका, तरणि, लोला, गत्वरा, गामिनी, तरी जंधाल, प्लाविनी धारिणी और वेगिनी ये दस विभाग किये गये है। इनमें लम्बाई अधिक है पर चौड़ाई थोडी और गहराई उस से भी कम है। वेगिनी की लम्बाई 196 चैड़ाई 22 और ऊँचाई 17-3/5 हाथ बतलाई गयी है। उन्नता के ऊर्ध्वा, अनूर्ध्वा. स्वर्णमूखी गर्भिणी और मन्थरा - ये पाँच विभाग किये गये है। इन में मन्थरा की ऊँचाई 48 हाथतक रखी गई है। नौका की सजावटों का भी बहुत सुन्दर वर्णन आया है। सजावट में सोना, चाँदी, ताँबा और तीनों को मिलाकर प्रयोग करना चाहियें। चार शृङ्ग (मस्तूल) वाली नौका को श्वेत तीनवाली को लाल दो शृङ्ग वाली नौका पीला और एकशृङ्गवाली नौका को नीला रङ्ग करना चाहिये। नौकाओं का मुख सिंह, महर्षि, सर्प, हाथई व्याघ्र पक्षी, मेढक या मनुष्य की आकृति का बनाया जा सकता है। नावों के उपर कोठरी, कमरा आदि बनाने की दृष्टि से नावों के तीन भेंद है - सर्व, मध्य और अग्रमन्दिरा (सगृहा त्रिविधाप्राक्ता सर्वमध्याग्रमन्दिरा) जिन में एक सिरे से दूसरे सिरनेक मन्दि बना हो वे नावे सर्वमन्दिरा कहलाती है। ये राजा के कोष, अश्व, नारी आदि ले जानेके लिये होती है। जिनके मध्य में मन्दिर बना हो, मध्यमन्दिर बना हो, अ मन्दिर कहलाती है। ये बड़ी बड़ी नावे जहाज को तरह होती है, जो लम्बी औरख युद्ध के लिये उपयुक्त है। साँची मग तथा अमरावती के स्नुष और पर अंकित कलात्मक दृश्यों में जहाँजी एवं नौकाओं का अंकन है इन अंकों से तत्कालीन जहाँजों तथा नौकाओं स्वरूप अनेक निर्माण प्रविधि, विविध

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

उपकरणों आदि का परिचय मिलाता है।

उपर्युक्त सभी विवरणों से स्पष्ट रूप से चलता है कि प्राचीन भारत में नौका- निर्माण कला पूर्वरूप से विकसित हो चूकी थी। इसके परिणाम स्वरूप तत्कालिन जल परिवहन व्यवस्था सुसमृद्ध और दृढ हुई है। प्राचीन नौका निर्माणकता के प्रमाण देखते यह कह सकते हैं मजबूती और तीव्रगति ने इनकी उपयोगिता में क्रान्तिकारी परिवर्तन ला दिया।

पाटीप

1. वटकञ्चानुवाकश्ध रल्लकश्च कुडङ्कः । पुङ्खो नयुङखः समुदगश्च विटपट्टाघटाः खटः ॥ अम. 3.5.17
2. शतारिलानावमातस्थिवांसम् । ऋ। 119.5.
3. ऋग्वेद 1.56, 4.55:6, 6.62.7, 10.40.7
4. 1-112.6.
5. ऋ 1.11.6.5
6. वाजसनेयी संहिता. 21.7
7. 87-6-3-58
8. वही - 5.1.44
9. वही 3.2.184
10. वही - 4.4.7
11. वही - 4.4.91
12. जातक. 2-190
13. अ. 5-4-49
14. 37.5-4-4915 4.442

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

15. वही 2.111.
16. वही 2.239,112
17. यही 2.126.
18. सबै समागम्य करोम नार्थ ।द्रोणी दलहं स्वयन्तूपवत्रं ॥ जा. गा. 764.466)
19. महा. 1.148.5
20. 2-89.11.6.48.26, 6.50.11
21. अस्य वाहनं सयुक्ताकर्णग्राहवती सुभाम् । 23. वही रामा. 1.24.2.3. 1.45.6
22. हयंच सज्जा नीचेतिदावी: रामा. 7.46. 32.
23. अथाः स्वस्तिक विज्ञेयां महाघण्टघरावराः
24. अ. 2.44.28.
25. पणयान तरे गाप्यं पौरुषोऽर्धपणंतरे। पादं पशुश्य योशिश्च पादार्धं रिक्तकः पुमान । मनु. 8.404.
26. शासक नियामकदात्र रश्मिग्राहरोत्सचकाधि, ठिताश्च महानावे मन्तग्रीष्मतायांसु महानदीषु प्रयोजते । अर्थ 2.45.28.
27. भरत्रादिभ्यः ष्ठन् । अ. 4.4.16.
28. 4.4.15 अष्टाध्यायी
29. 2-1-2 रघुवंश
30. चर्मावनद्धमुडुपं स्त्रवः काष्ठं करण्डवत्। मलिसज्जन
31. 4-4-5 अष्टा.
32. प्लवः काष्ठं करण्डवत् महा. 1.79. ।
33. लघुयत्कोमलं काष्ठं सुघटं ब्रह्मजाति यत् ।
34. न सिन्धउगाद्याईति लोहबन्धं तल्लाहकान्तैर्हितयते चलौहम् ।

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

35. राजहस्तमितायामा तत्पादपरिणाहिनी । तावदेवोन्नता नौका क्षुद्रेत्तिगदिता बुधैः॥ अतः सार्धमितायामा तदर्धपरिणाहिनी । त्रिभागेनोत्थिता नौका मध्यमेति प्रचक्षते । क्षुद्राथ मध्यमा भीमा चपला पटला भया दीर्घा पत्रपटा चैव गर्भरा मत्थरा तथा। नौकादश कमित्युक्तं राजहस्तैरनुकममि। एकैकवृद्ध साधैश्च विजानीयद्. द्वयं द्वयम् ॥
36. राजहस्तद्वयामा अटांश परिणाहिनी नौरेय दीर्घका नाम दशाडोनोन्नतापि च।. गोधिका तरणिलौला गत्वरा गामिनी तरिः जंघाला प्लाविनी चैव धारिणी वेगिनी तथा । राजहस्तैकंकबृद्धया नौकानामानि वैदस उन्नतिः परिणाहष्च दशाष्टशमितौ क्रमात् ॥
37. राजहस्तद्वयमिता तावत्प्रसरणोन्नता । इयमूर्ध्वाभिधा नौका क्षेमाय पृथिवीभुजाम् । ऊर्ध्वानूर्वा स्वर्णमुखी गर्भिणी मन्थरा तथा राजहस्तैकैकवृद्वया नाम पञ्चत्रयं भवते ॥
38. धात्वादीनामतो वक्ष्ये निर्णयं तरिसंश्रयम् । कनकं रजतं ताम्रं त्रिनयं वा यथआक्रमम् । ब्रह्मादिभिः परिन्यस्य नौकाचित्रणकर्मणि चतुःशृङ्गां त्रिशृङ्गभा दिशृङ्गा ।
39. सर्वचो मन्दिरं यत्र ज्ञा त्रेया सर्वमन्दिरा ।
40. मध्यतो मन्दिरं यत्र ज्ञा ज्ञेया सर्वमन्दिरा ।

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

सन्दर्भग्रन्थ-सूचि

अथर्ववेद

निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, 1895-981 मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, 1666-69

अमरकोश

अर्थसास्त्र

व्यारव्याकार वाचस्पति गैरोला, चौखम्भा विद्याभवन वाराणसी, 1962. उदयवीर शास्त्री, मेहरचन्द्र लक्ष्मनदास, संस्कृत पुस्तकालय, नई दिल्ली, 1970. सं. पा. आर. रामशास्त्री, मैसूर, 1929. गणपति शास्त्री, त्रिवेन्द्रम, 1924.

अष्टाध्यायी

रामलाल कपूर ट्रस्ट, अमृतसर, 1964-681

ऋग्वेद

वैदिक शोध संस्थान, पूना, 1937-46.

जातक : -

हिन्दी अनुवाद, छः भाग, भदन्तआनन्द कौशल्यायन हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, अंग्रेजी अनुवाद ई.वी. कावेल ।मनुस्मृत्ति मणिप्रभा हिन्दी व्याख्योपेता, चौखम्भा संस्कृत सीरीज आफिस, वारणसी, वि.सं. 2036

महाभाष्य

पंतजलि मुनि विरतिचम् हिन्दी व्याख्या सहितम् 3 भाग संपा. गिरधर शर्मा, वाराणसी, 1959.

महाभारत (छः भाग)

गीताप्रेस, गौरखपुर गीताप्रेस, गौरखपुर

रामायण (दो भाग)

संस्कृत साहित्य का इतिहास

बलदेव उपाध्याय, वाराणसी, 1968.

जातक कालीन भारतीय संस्कृति

वियोगी मोहनलाल महतो

वैदिक इन्डेक्स, भाग-2

अनु, रामाकुमार राय, चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी 1972.